B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – School Management & Leadership
Unit – 2 (c)
Topic – Headmaster(प्रधानाध्यापक)
Lecture No: 22

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College,
Shahpur Patory
(Samastipur)

भूमिका

विद्यालय के नेता के रुप में समाज में प्रधानाध्यापक का स्थान महत्वपूर्ण है। किसी भी प्रधानाध्यापक का मूख्य कार्य छात्र -छात्र, शिक्षक-छात्र, शिक्षक-शिक्षक, शिक्षक-निरीक्षक, शिक्षक-अभिभावक आदि के संबंधों का संतुलित एवं निरीक्षित करना होता है। विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों की उन्नति एवं सफलता प्रधानाध्यापक के शिक्षा -संबंधी ज्ञान के ऊपर ही निर्भर करता है। उसके व्यक्तित्व का अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं विद्यालय के वातावरण पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि प्रधानाध्यापक प्रभावशाली तथा उच्च चरित्रवाला होगा तो उसका प्रभाव विद्यालय के समस्त वातावरण पर पड़ेगा। इसके विपरीत यदि प्रधानाध्यापक अयोग्य तथा अपने कार्य के प्रति उदासीन होगा तो उसका प्रभाव विद्यालय के लिए घातक होगा।

प्रधानाध्यापक का महत्व

प्रधानाध्यापक के महत्व को विभिन्न शिक्षाविदों व आयोगों ने अपने -अपने शब्दों में व्यक्त किया है। कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं-

1. **रायबर्न** के अनुसार, "प्रधानाध्यापक विद्यालय-रूपी जहाज का कैप्टन होता है।"

2. **सर परसीवल रेन** के शब्दों में, "घड़ी के लिए जितना स्प्रिंग का महत्व मुख्य है, मशीन के लिए कालक-चक्र का, वाष्पचालित जहाज के लिए इंजन का, उतना ही महत्व है – विद्यालय के लिए प्रधानाध्यपक का।"
3. **हूसायुँ कबीर** के अनुसार, "वे (शिक्षक) राष्ट्र के भाग्य-निर्णायक हैं। शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी हैं।"
4. **माध्यमिक शिक्षा आयोग** के शब्दों में, "किसी विद्यालय की प्रतिष्ठा का बहुलांश उन प्रभावों पर आश्रित रहता है , जो प्रधानाध्यापक अपने साथियों, अपने छात्रों, तथा जनता पर डालता है।"
5. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)** के अनुसार, "किसी समाज में शिक्षकों के स्तर से उसकी संस्कृति, सामाजिक स्थिति का पता लगता है। कहा जाता है कि कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है।"

अब प्रश्न यह उठता है कि विभिन्न शिक्षाविदों एवं आयोगों ने प्रधानाध्यापक को आखिर क्यों ईतना महत्वपुर्ण माना है। इसका कारण उसके द्वारा संपन्न किए जाने कुछ महत्वपुर्ण दायित्व निम्नांकित हैं :-

1. **केन्द्र-बिन्दु** - प्रधानाध्यापक विद्यालय का केन्द्र-बिन्दु होता है, अध्यापक व कर्मचारीगण उसके आदेशों का पालन करते हैं। वह विद्यालयीय कार्यक्रम का नियोजन करता है और वही कार्य का विभाजन तथा विभिन्न प्रवृत्तियों का समायोजन करता है। विद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की सफलता प्रधानाध्यापक की दक्षता , जागरूकता, कल्पना-शक्ति, मौलिकता आदि गुणों पर निर्भर करती है।
2. **व्यक्तित्व** – किसी भी प्रधानाध्यापक की दृढ़ छाप समस्त विद्यालयी कार्यक्रमों पर स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। यह कहना सत्य ही है कि *"जैसा प्रधानाध्यापक वैसा ही विद्यालय।"*
3. **विशिष्ट स्थान** – विद्यालय-प्रबंधन में प्राचार्य का विशिष्ट स्थान होता है। उसे छात्र-शिक्षक, प्राचार्य-शिक्षक, प्राचार्य-छात्र, प्राचार्य-अभिभावक आदि संबंधों में समन्वय का कार्य करना होता है। **(समाप्त)**